ओ३म्

आर्य मार्तण्ड

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजापार्क, जयपुर

वर्ष 97 अंक 17 पृष्ठ 16 मूल्य ₹5/- जून प्रथम प्रकाशन 05 जून से 20 जून, 2023

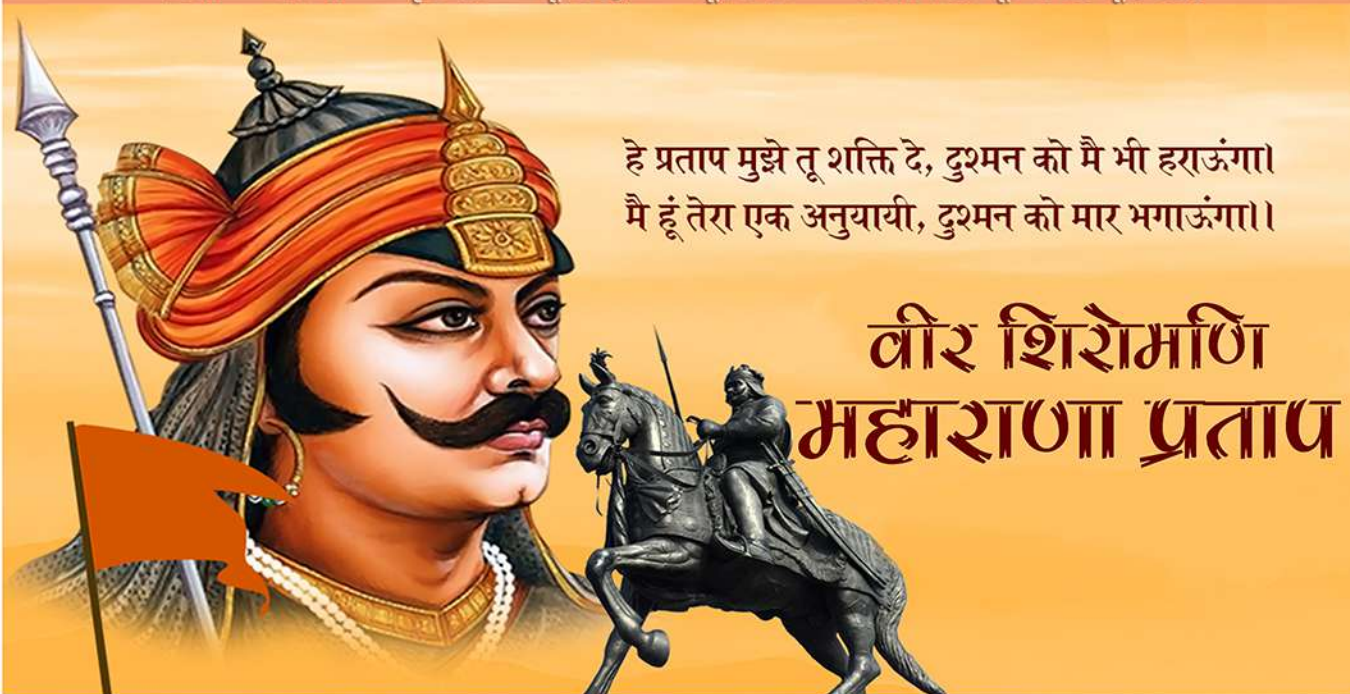

आर्ष गुरुकुल, महाविद्याल, आबू पर्वत के ब्रह्मचारी वार्षिकोत्सव के अवसर पर व्यायाम प्रदर्शन करते हुए।

आर्ष गुरुकुल महाविद्याल आबू पर्वत के वार्षिक उत्सव के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मंचासीन पदाधिकारी ।

आर्यवीर दल शिविर एवं रामकथा के अवसर पर नादिया, पिंडवाड़ा में आर्यवीरों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन ।

आर. एन. आई. नं. 10471/60

ओ३म्

आर्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राज. का मुखपत्र

ज्येष्ठ, शुक्लपक्ष, पूर्णिमा, सम्वत् 2080, कलि सम्वत् 5124, दयानन्दाब्द 199, सृष्टि सम्वत् 01,96,08,53,124

संरक्षक

1. डॉ. रमेशचन्द गुप्ता, अमेरिका
2. श्री दीनदयाल गुप्त (डॉलर फाउन्डेशन)

प्रेरणा स्रोत

1. श्री विजयसिंह भाटी
2. श्री जयसिंह गहलोत

सम्पादक

1. श्री जीव वर्धन शास्त्री

परामर्शक

1. डॉ. मोक्षराज

सम्पादक मण्डल

1. डॉ. सुधीर कुमार शर्मा
2. श्री अशोक कुमार शर्मा
3. डॉ. सन्दीपन कुमार आर्य
4. श्री नरदेव आर्य
5. श्री बलवन्त निडर
6. श्री ओमप्रकाश आर्य

आर्य मार्तण्ड

वार्षिक सदस्यता शुल्क	**–**	**रु. 100/–**
पाक्षिक प्रकाशन सहयोग	–	रु. 2100/–
मासिक प्रकाशन सहयोग	–	रु. 5100/–
षाण्मासिक प्रकाशन सहयोग	–	रु. 11000/–
वार्षिक प्रकाशन सहयोग	–	रु. 21000/–

प्रकाशक

आर्य प्रतिनिध सभा राजस्थान राजापार्क,

जयपुर – 302004

0141–2621879, 9314032161

e-mail : aryapratinidhisabhrajasthan@gmail.com

मुद्रण : दिनांक 04.06.2023

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः।
अश्रद्धामनृतेऽदधाच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।।

विषयानुक्रम

–	सत्य क्या है?	04
–	विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून	06
–	धर्मात्मा श्रीकृष्ण और पापात्मा कर्ण	09
–	आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत...	12
–	आर्यसमाज के नवें व दसवें नियमों...	13
–	समाचार – वीथिका	14

आर्य मार्तण्ड पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी प्रतिवाद हेतु न्याय क्षेत्र जयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

दि राजस्थान स्टेट को–ऑपरेटिव बैंक लि.
खाता धारक का नामः–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर
खाता संख्या :– 10008101110072004
IFSC Code :- RSCB0000008
सभा को दिया गया दान आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है।
AAHAA5823D/08/2020-21/S-008/80G

प्रकाशक एवं मुद्रक श्री जीव वर्धन शास्त्री ने स्वामी आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजापार्क जयपुर की ओर से वी.के. प्रिन्टर्स सुदर्शनपुरा जयपुर से आर्य मार्तण्ड पत्रिका मुद्रित कराई और आर्य प्रतिनिधि सभा राजापार्क जयुपर से प्रकाशित सम्पादक– **श्री जीव वर्धन शास्त्री–मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा**

सत्य क्या है?

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

खण्डित भारत के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरु की दो पुस्तकें प्रसिद्ध हैं– 'मेरी कहानी' तथा 'भारत की खोज'। इन दोनों ही पुस्तकों में अन्य बातों के साथ उन्होंने मो.क. गाँधी जी को अति महिमामण्डित किया है, जिसमें मो.क. गाँधी जी को प्राचीन भारतीय ऋषियों के समकक्ष तक कहा है। ये दोनों ही पुस्तकें क्रमशः 1935 तथा 1944 में प्रकाशित हो चुकी थीं किन्तु वहीं श्री ज. ला. नेहरु जी जब कनाडा के प्रधानमंत्री लेस्टर बी. पियर्सन द्वितीय बार 1955 में भारत आए थे तो उनसे बातचीत के समय में, चूंकि पियर्सन की उनके और गाँधी जी के सम्बन्ध में जानने की बड़ी रुचि थी और नेहरु जी ने भी उनकी अभिरुचि को देखकर ही अपने और गांधी जी के सम्बन्धों के बारे में बताना प्रारम्भ कर दिया। बातचीत का स्वरूप क्या था? यह आप पियर्सन के संस्मरण में ही देखें– "He was talking about Gandhi and his relationship with him] **what a great actor Gandhi was,** how clever he was with the British] how he cultivated this simple mystic character because this would appeal to them- 'You- know', **'he really was an awful old hypocrite-**"[1]

अर्थात् 'वे गाँधी के साथ अपने सम्बन्धों के बारे में बात कर रहे थे। **गाँधी कितना बड़ा अभिनेता था** और अंग्रेजों के साथ कितना चालाक था। उसने रहस्यात्मक साधारण चाल–चलन का विकास किया, जो उन्हें (अंग्रेजों को) आकर्षित करता था। तुम जानते हो? उन्होंने कहा, **वह बुड्ढा गाँधी सचमुच ही भयङ्कर पाखण्डी (धूर्त) था।'**

इस तथ्य को जानकर प्रत्येक व्यक्ति जो मो. क. गाँधी जी को तथा ज.ला. नेहरु जी को जानता है, उसे अत्यन्त आश्चर्य होगा कि अन्ततः गाँधी जी के निधन के लगभग 8 वर्ष पश्चात् ऐसा कटु सत्य नेहरु जी ने एक विदेशी प्रधानमत्री के समक्ष क्यों प्रकट किया? गाँधी जी के साथ नेहरु जी का आन्तरिक सम्बन्ध कैसा था? इसको जानने के लिए हंसराज रहबर द्वारा लिखित 'गाँधी बेनकाब, नेहरु बेनकाब' पुस्तक पढ़नी चाहिए, जहाँ सप्रमाण दिखाया गया है कि गाँधी जी छल–कपट करने में अत्यन्त निपुण थे और ऐसी ही प्रेरणा वह गुप्त रूप से नेहरु जी को भी करने के लिए प्रदान किया करते थे।

भारत का दुःखद विभाजन तथा हिन्दू नरसंहार की दुःखद, रोमाञ्चकारी व हृदयविदारक घटनाएँ क्यों हुई? इन सबका आभास इन दोनों ही व्यक्तियों को था और आभास ही नहीं अपितु इन दोनों की ही कुटिलनीति का दुष्परिणाम था अन्यथा जो 1946 में जनसभाओं में डिण्डिमघोषपूर्वक कहते थे कि 'पाकिस्तान मेरे शव पर बनेगा', उन्हीं के द्वारा पुरुषोत्तमदास टण्डन जैसे वरिष्ठ नेताओं के घोर विरोध करने पर भी सहर्ष स्वीकार कर लिया गया और नेहरु जी भी तो कहते थे कि 'पाकिस्तान केवल कुछ लोगों का (स्वप्न) विचारमात्र है'। नेहरु जी ने तो 1962 में चीनी आक्रमण के पश्चात् लोकसभा में अपनी ही अदूरदर्शिता को स्वीकार किया है। गाँधी जी ने भी कहा है कि

मुझसे हिमालय जैसी भयङ्कर भूल हुई। ये सब बातें भोली–भाली भारतीय जनता को बहकाने व फुसलाने के लिए कही गई अन्यथा स्वातंत्र्यवीर सावरकर जी ने 1946 में ही अन्तरिम सरकार के निर्माण के चुनाव के समय ही जनसभाओं में कहा था कि कांग्रेस को मत (राय) देना, पाकिस्तान को मत (राय) देना है और चीनी आक्रमण से बहुत पहले ही रामलीला मैदान में वीर सावरकर जी ने कहा था– बुद्ध या युद्ध। उस समय भी नेहरु जी चीन के मैत्री के व्यामोह में विविध प्रकार के प्रलाप कर रहे थे, किन्तु कुछ वर्षों पश्चात् चीन की ओर से बुद्ध तो आए नहीं, युद्ध आया। जिसमें भारत की बहुत सारी भूमि चीन ने हड़प ली और सहस्रों लगभग साधनहीन हमारे भारतीय सैनिक मारे गए। साधनहीन इसलिए कहा क्योंकि जो कुछ भी हमारे सैनिकों के पास साधन थे, वे उस भयङ्कर शीत में सर्वथा नगण्य (सामान्य) आरक्षी (पुलिस) के अनुसार) थे।

इतना ही नहीं जब 1905 में वीर सावरकर जी ने विदेशी वस्तुओं के परित्याग का आह्वान किया और स्थान–स्थान पर उसका प्रदर्शन हुआ तो दक्षिणी अफ्रीका (डरबन) में बैठे मो.क. गाँधी जी ने इसे हिंसा प्रकट हो रही है, ऐसा अभिव्यक्त किया किन्तु उन्हीं मो.क. गाँधी जी ने जब 1922 में विदेशी वस्तुओं की होली जलाने के लिए लोगों को प्रेरित किया तो इसके उत्तर में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने परामर्श दिया कि जलाने की अपेक्षा ये वस्त्र अभावग्रस्त व निर्वस्त्र व्यक्तियों में वितरित कर दिए जाएँ। तब गाँधी जी ने उन वस्तुओं को टर्की भिजवाया और मूर्खतापूर्ण खिलाफत आन्दोलन को चलाया, जिसका मोतीलाल नेहरु, महामना मदनमोहन मालवीय ने तथा यहाँ तक कि मोहम्मद अली जिन्ना जैसे लोगों ने भी घोर विरोध किया था। जिन्ना ने तो यहाँ तक कहा था कि– भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन से टर्की से क्या सम्बन्ध है? इसी प्रकार के अनेक राष्ट्रविरोधी गतिविधियों के कारण ही तो नेहरू जी ने गाँधी जी को पाखण्डी, धूर्त व कुशल अभिनेता कहा।

इसे पढ़ने के पश्चात् अब आप निर्णय करें क्या गाँधी जी वास्तव में सत्य व अहिंसा के पुजारी थे? और नेहरु जी राष्ट्रवादी थे? वह वास्तविक सत्य अब भारतीय जनता के सामने उद्घाटित ही होना चाहिए, जिससे वह अपने व राष्ट्र के भविष्य का निर्णय करे। यह समय भारत के भविष्य के निर्माण का समय है, क्योंकि भारत पर पूर्व में शासन करने वाली शक्तियाँ आज विक्षुब्ध है और वह किसी न किसी प्रकार से भारत को दुर्बल बनाकर उस पर अपना अधिकार करना चाह रही है। वे तो स्पष्ट ही घोषणा कर रही हैं कि मोदी को नहीं रोका गया तो भारत बहुत शक्तिशाली हो जाएगा। भारत का विपक्षी दल उन्हीं के संकेत पर भाजपा के नहीं अपितु मोदी जी के विरोध में संगठित हो रहे हैं और भारत को शक्तिहीन, भिक्षुक बनाने में विदेशी शक्तियों के उद्देश्य की पूर्ति कर रहे हैं।

टिप्पणीः

The Memoirs of the Right Honorable Lester B Pearson

Vol- 2: (Mike) 1948-1957

Edited by John A- Munro and Alex. I- Inglis University of Toronto press

कुलाधिपति, गुरुकुल प्रभात आश्रम,
टीकरी, भोलाझाल, मेरठ

विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को

— श्वेतकेतु शर्मा

'घर—घर यज्ञ से पर्यावरण करें शुद्ध व मनोकामना करें पूर्ण'

आज के विज्ञान के क्षेत्रों में असाधारण प्रगति, देश में विभिन्न घातक रोगों के सरकारी दावे तथा देश में फैल रहे प्लेग, तपेदिक, कोढ़, स्वाइन फ्लू, डेंगू, मलेरिया, वायरल फीवर, एड्स, चर्मरोग, हृदय रोग, गुर्दा रोग, कोरोना वायरस आदि की उपस्थिति से निरन्तर प्रसार से विश्व सकते में है, दिनोंदिन बढ़ता चला जा रहा है, इन रोगों के पीछे गन्दगी, गरीबी, आबादी, औद्यौगिकीकरण, वैभव विलासिता, अदूरदर्शी योजनाएँ व अव्यवहारिक नीतियां, आपसी सामन्जस्य का अभाव व दृढ़ इच्छाशक्ति का न होना भी है।

भारतीय ऋषि मुनियों के वैदिक चिन्तन पर आधारित यज्ञ मानव समुदाय के लिए महत्त्वपूर्ण हो रहा है। वेदों के परिपेक्ष में यह वैदिक संस्कृति व आयुर्वेद के प्राण है। वेदों में 'यज्ञौ वै श्रेष्ठतमं कर्म' कहा गया है, अर्थात् यज्ञ जीवन का श्रेष्ठतम कर्म है, यज्ञ को कर्मकाण्ड की परिधि के साथ वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में देखने की जरुरत है। विभिन्न रोगों की रोकथाम व शारीरिक मानसिक पर्यावरण विशुद्ध करने तथा मनोकामनाओं को पूर्ण करने के लिये यज्ञ थैरेपी या यज्ञ महत्त्वपूर्ण है। यज्ञ से प्रदूषण को अल्प करने तथा वायुमण्डल को आध्यात्मिक रूप से शुद्ध करने हेतु किया जाता है अपितु यज्ञ के इस रहस्य के साथ शारीरिक स्वास्थ्य व वातावरण में व्यापक रूप से व्याप्त विभिन्न प्रकार के वायरल, बैक्टेरियल, फंगस व शरीर के विभिन्न अंग—प्रत्यंगों में व्याप्त रोगों को निष्क्रीय करने की वैदिक दार्शनिक वैज्ञानिक प्रामाणिक विधा भी है।

शरीर को चलाने के लिए रस, रक्त, स्नायुविहीन नाड़ियाँ होती हैं, इसको प्रभावित करने के लिये आधुनिक चिकित्सा में इन्जेक्शन जो इन्ट्रावेनस ,सबकुटेनियस, मस्कुलर आदि के द्वारा औषधि के माध्यम से चिकित्सा की जाती है व की जा रही है, परन्तु इससे भी कहीं सूक्ष्म वायु में मिश्रित हो कर शरीर में पहुंचाने वाली यदि कोई विधा है तो वह आयुर्वेदीय वैदिक यज्ञ थैरेपी ही है, यज्ञ का वैज्ञानिक आधार भी यही है कि अग्नि अपने में जलाई गई वस्तु को करोड़ों गुना अधिक सूक्ष्म बना देती है, प्रयोग के रूप में देखें तो एक लाल मिर्च अपने में उतनी तीखी नहीं होती, परन्तु अग्नि में डाल कर जलाया जाये तो उसका प्रभाव दूर—दूर तक फैलता है। फ्रांस के वैज्ञानिक डॉ. हाफकिन व डॉ. कर्नल किंग ने 'अग्नि के सूक्ष्मीकरण सामर्थ्य' सिद्धान्त के आधार पर प्रमाणित भी किया है। उन्होंने आग में घी जलाने व चावल, केसर के धूएं से वातावरण की शुद्धता को प्रमुखता से प्रमाणित किया। यही यज्ञ थैरेपी का प्रारम्भिक स्वरूप है।

आयुर्वेदीय यज्ञ से अग्नि में पदार्थ डालने पर स्थूल रूप सूक्ष्म रूप में परिवर्तित हो जाता है व होम द्रव्यों को परमाणु रूप करके वायु व जल के साथ मिलकर शुद्ध करती है, अग्नि में डालने पर सैकड़ों लोगों को प्रभावित करती है। ग्राह्य के 'गैसीय व्यापनशील नियम' के अनुसार निश्चित ताप व दाब पर गैसों की व्यापन गतियाँ उसके

घनत्व के वर्गमूल के विपरीत अनुपाती होती है अर्थात् गैस जितनी हल्की होगी, वह उतनी ही शीघ्रता से वायु में मिल सकेगी। इसी को अथर्ववेद में कहा है ''स्वाहा कृतेउर्धवनम्रसं मारूतं गच्छतम्'' यज्ञ में स्वाहा पूर्वक आहुति देने से वायु आकाश में व्याप्त होती है। इसी सिद्धान्त के आधार पर अग्नि में डाला गया पदार्थ सूक्ष्म होकर दुर्धन्ध को दूर करता है व शरीर में प्रविष्ठ होकर विभिन्न जीवाणुओं से सुरक्षित रखता है।

यज्ञ में कपूर, आम की समिधा, घृत, हवन सामग्री का प्रयोग किया जाता है, (1)– कपूर आसानी से जलता हुआ अग्नि को प्रज्ज्वलित करने के लिये प्रयोग किया जाता ही, इसका कुछ भाग बिना किसी रासायनिक परिवर्तन के उड़ जाता है व वायु को सुगंधित करता है, शेष भाग सुगन्ध से दुर्गन्ध को छुपाने में सहयोगी होता है।

(2)– आम या अन्य लकडियाँ जलने पर 500 डिग्री तापांश देता है। लकड़ी का मुख्य भाग सैलुलोज व लिग्रोसेलुलोज में हाईड्रोजन 47.62 प्रतिशत, कार्बन 28.57 प्रतिशत, ऑक्सीजन 23.81 प्रतिशत होती है। सेलुलोज व लिग्रोसेलुलोज के ऑक्सीजन से हाईड्रोजन बनती है। सैलुलोज व लिग्रोसेलुलोज के साथ पानी मिल कर कार्बनडाईऑक्साईड व पानी बनती है। यदि वायु निकलने का प्रवेश द्वार बन्द हो तो कुछ मात्रा में कार्बन मोनोऑक्साइड निकलती है, इसलिए यज्ञ खुले स्थान पर होना चाहिए जिससे कार्बन मोनोऑक्साइड कम बने व वायु में मिल जाये। यज्ञ कुण्ड की बनावट, समिधाओं की लम्बाई, उसमें रखने की विद्यि तथा तापांश वायु की समुचित मात्रा देता है, जिससे कार्बन मोनोऑक्साईड वायु में विलुप्त हो जाती है और कोई हानि नहीं होती है, लकड़ी की आसवन क्रिया से कैल्शियम, पोटैशियम, मैग्नीशियम, एल्मोनियम, लोहा, मैगजीन, सोडियम, फास्फेट, गन्धक बनते है।

(3)– घृत–ग्लिसरॉल व कार्बोक्सिलिक अम्लों के मेल से बना है, इसके जलने से कैप्रोनियम ऐल्डीहाइड, नार्मल आप्टिकल ऐल्डीहाइड तथा कई उड़नशील ऐल्डीहाइड व कई वाष्पशील वसीय अम्ल बनते हैं, जो वातावरण को शुद्ध व सुगंधित करते हैं।

(4)– हवन सामग्री अग्नि में भलीभाँति प्रज्ज्वलित हो जाती है, इसमें विभिन्न प्रकार की वनौषधियाँ होती है, अग्नि में जलने पर वायु में व्याप्त व शरीर में क्रियाशील वायरस व वैक्टेरिया को निष्क्रियता प्रदान करती है, इससे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता का विकास भी होता है, नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होती है।

यज्ञ पर वैज्ञानिक शोध डब्लू.एच.ओ ने विश्व सर्वेक्षण में स्पष्ट किया है कि मानव जीवन के हितार्थ वैज्ञानिक जगत् में आ रही एन्टीबायोटिक का प्रभाव आगे आने वाले समय में प्रभावहीन हो रहा है, यदि डब्लू.एच. ओ. के इस सर्वेक्षण को मान लिया जाये तो आगे आने वाले समय में स्थिति भयंकर हो सकती है, जो अभी भी विभिन्न वायरस रोगों की चिकित्सा में एन्टीबायोटिक के निष्प्रभावीत होने का संकेत दे रही है, इसीलिए वेद में सृष्टि के आदिकाल में ही कहा है 'आयुर्यज्ञेनकल्पताम' जीवन की यज्ञ से रक्षा करो, क्योंकि यज्ञ में ही वह शक्तियां है जो सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवाणुओं को निष्क्रिय कर सकती है, वैज्ञानिकों में डॉ. फुन्दन लाल जी, डॉ. सत्यप्रकाश सरस्वती, डॉ. रामप्रकाश, डॉ. टेले, डॉ. टोकीन, राष्ट्रीय

वनस्पति अनुसंधान संस्थान लखनऊ, उ. प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, डॉ. कर्नल हाफकिन, डॉ. किंग आदि ने अनेकों प्रयोगों व अनुसन्धान ने स्पष्ट किया है कि 'यज्ञ मे डाली गई विभिन्न वनोषधियाँ सूक्ष्म वायु में मिश्रित हो कर पर्यावरण को विशुद्ध करती हैं व शरीर को स्वस्थ्य रखती हैं तथा मनोकामनाओं को पूर्ण करती हैं।यज्ञ में डाली गई वस्तुएँ करोडों गुना सूक्ष्म होकर विभिन्न वायरस, वैक्टीरिया को निष्क्रिय करके शरीर को खतरनाक वायरस से सुरक्षित करती हैं, अन्तरिक्ष वैज्ञानिकों ने अपने अनेकों प्रयोगों से यह सिद्ध किया है कि एक दिन यज्ञ करने से 100 यार्ड क्षेत्र में एक महा तक प्रदूषण नहीं हो सकता है ।

इस प्रकार वैज्ञानिकों ने यह भी प्रमाणित किया है कि यज्ञ से शरीर को ऊर्जावान् तत्त्व नष्ट नहीं होते हैं, अपितु बढ़ जाते हैं तथा शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं, यज्ञ में प्रयोग करने के लिये कपूर, आम या अन्य समिधाएँ, गाय का शुद्ध धृत, हवन सामग्री से वातावरण शुद्ध व शरीर निरोगी व सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है, यज्ञ खुले स्थान या कमरे में करना हो तो खिड़कियाँ खुली होनी चाहिए तथा दर्शन, श्रवण, गन्ध आदि इन्द्रियों से सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती है, यज्ञ में वेदमंत्रों के उच्चारण से शरीर मैं सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है। यज्ञशाला में ताबें के पात्र से निकलने वाली तरंगों से सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त होती है। यज्ञ में विशेष वनौषधियों से बचाव– वायरल रोगों में निम्न वनौषधियों को एक किलो सामग्री में मिलाकर दैनिक यज्ञ करने से वातावरण को प्रदूषित होने से बचाता है– ''गूगल 50 ग्राम, सफेद चन्दन 25 ग्राम, लाल चन्दन 25 ग्राम, अगर व तगर 50 ग्राम, चिरौंजी व नारियल 50 ग्राम, नारियल का बुरादा 75 ग्राम, जायफल व लौंग 50 ग्राम, मुन्नक्का 50 ग्राम, किशमिश व छुआरा 75 ग्राम , बड़ी इलायची 50 ग्राम, गुलाब के फूल सूखे 50 ग्राम, बड़ी हर्र 50 ग्राम, गिलोय 100 ग्राम, साठी के चावल 50 ग्राम, सहदेव व जटामासी व सतावर 100 ग्राम, कूट 50 ग्राम, ब्राह्मी 75 ग्राम, काले तिल 75 ग्राम, अश्वगंधा 25 ग्राम, चिरायता 25 ग्राम , हूपकला 25 ग्राम सुदर्शन की पत्ते, 25 ग्राम' अतः स्पष्ट है कि वर्तमान परिस्थितियों व परिप्रेक्ष्य मे विभिन्न वायरस, वैक्टेरिया व कोरोनावायरस को वातावरण से समूल नष्ट करने के लिये ऋषि मुनियों के द्वारा प्रतिपादित यज्ञ विधा को सम्पूर्ण विश्व में अपनाना पड़ेगा, घर–घर यज्ञ से वातावरण को विशुद्ध करने का प्रयास करें, शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाये, मानसिक तनाव को दूर करें, सकारात्मक सोच उत्पन्न करें, सुख, शान्ति, सफलता व शारीरिक, मानसिक सन्ताप एवं पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए यज्ञ को जीवन्त करें और मनोकामनाओं की सफलता को पूर्ण करें।

आयुर्वेद ज्ञाता वैद्य, आयुर्वेद शिरोमणि
पूर्व सदस्य हिन्दी सलाहकार समिति भारत सरकार
gmail: shwetketusharma@gmail.com

हे मनुष्यो! तुमको वेदी आदि यज्ञ के साधनों का सम्पादन करके सब प्राणियों के सुख तथा परमेश्वर की प्रसन्नता के लिये अच्छी प्रकार क्रियायुक्त यज्ञ करना और सदा सत्य ही बोलना चाहिये और जैसे मैं न्याय से सब विश्व का पालन करता हूँ वैसे ही तुम लोगों को भी पक्षपात छोड़कर सब प्राणियों के पालन से सुख सम्पादन करना चाहिये। — **महर्षि दयानन्द**

धर्मात्मा श्रीकृष्ण और पापात्मा कर्ण

पण्डित नन्दलाल 'निर्भय'

श्री रामचन्द्र, श्रीकृष्णचन्द्र दोनों पवित्रात्मा, परम ईश्वर भक्त, धर्मात्मा, देवपुरुष, मानवता के पुंज एवम् जीवमात्र के रक्षक थे। यदि इन दोनों देवदूतों को भारत के इतिहास से अलग कर दिया जाए तो आर्यसभ्यता–संस्कृति का सुन्दर महल धड़ाम से नीचे गिर कर चकनाचूर हो जाएगा। इस लेख के द्वारा मैं संसार के नर–नारियों को केवल योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन की पवित्रता के विषय में ही कुछ उनके शुभ कार्यों, उच्च विचारों से अवगत करा रहा हूँ। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि पाठकगण पढ़कर भारी लाभ उठाएगें।

श्रीकृष्ण जैसा त्यागी–तपस्वी, धर्मात्मा, वीर, बलवान, वेदभक्त, देशभक्त, स्पष्टवादी, सत्यवादी, धर्मात्माओं का रक्षक विद्वानों का सेवक, विनम्र, सुशील, निरभिमानी और योगी द्वापर युग में संसार में कोई दूसरा नहीं था। श्रीकृष्ण जी का लक्ष्य था, धर्मात्माओं की रक्षा तथा पापियों का खात्मा करना।

श्रीकृष्ण आप्त पुरुष थे। उन्होंने अपने जीवन में कोई वेदविरोधी काम नहीं किया। श्रीकृष्ण ने अपने सगे मामा, मथुरा के राजा अत्याचारी कंस का वध किया। यदि वे चाहते तो मथुरा राज्य की प्रजा के आग्रह को मानकर मथुरा राज्य के राजा बन सकते थे। उन्होंने उस समय साफ कहा जो ध्यान देने योग्य है। संसार के सभी राजनेता समझें तो संसार का कल्याण हो जाएगा। अतः ठीक तरह विचार करके धर्म लाभ उठाने का कष्ट करें।

मेरे प्यारे बहिन–भ्रात सब,
मेरा अब एलान सुनो।
राज्य सम्भालेंगे नाना जी,
मम इच्छा धार ध्यान सुनो।
राज्य आर्यों का चक्रवर्ती,
मैं अब लेने जाऊँगा।
सुखी करुँगा सारे जग को,
वैदिक धर्म निभाऊँगा।।

पाठक गण! तनिक विचार करो। क्या ऐसा त्यागी अब कोई तुम्हें इस संसार में नजर आता है। श्रीकृष्ण ने महाभारत का घोर युद्ध रोकने के लिए भारी परिश्रम किया। वे स्वयं दूत बनकर सन्धि का प्रस्ताव लेकर हस्तिनापुर गए। उन्होंने दुर्योधन को हर तरह समझाया। अन्त में पाण्डवों को केवल पाँच गाँव देने की दुर्योधन से प्रार्थना की, किन्तु दुर्योधन ने उनकी प्रार्थना ठुकराते हुए ऐसा कहा–

कान खोल कर सुन ले ग्वाले,
सूई नोंक सम भी धरती।
उन्हें न दूँगा,
मुझ से तो अब यह सारी दुनिया डरती।।
अगर पाण्डव कभी कृष्ण सुन,
किसी दिवस मर जाएंगे।
यहाँ जलाने उन्हें न दूंगा,
उन्हें चील, गिद्ध खाएंगे।।

दुर्योधन ने उन्हें बन्दी बनाना चाहा। जहर देकर मारना चाहा। हर प्रकार उनका निरादर किया। अन्त में वे विवश होकर वापिस वैराट नगर आ गए। अब जरा विचार करो, जो लोग श्रीकृष्णचन्द्र जी पर महाभारत का युद्ध कराने का दोषारोपण करते हैं, वे कितना अन्याय करते हैं। कई व्यक्ति

कहते हैं कि कर्ण ने अपने प्रश्नों से युद्ध क्षेत्र में योगी राज को निरुत्तर एवम् लज्जित कर दिया था। वे महाभारत में स्पष्ट वर्णन पढ़ें तथा ईमानदारी दिखाएँ।

अर्जुन के श्रीकृष्ण सारथी,
थे भारी गुणवान सुनो।
युद्ध कला में निपुण बहुत थे,
सभी खोलकर कान सुनो।।
केशव ने अर्जुन का रथ,
चतुराई से घुमा दिया।
कर्ण के रथ को यदुनन्दन ने,
दलदल में था फँसा दिया।
होकर के मजबूर कर्ण ने,
अर्जुन से तब फरमाया।
बन्द लड़ाई कर दे अर्जुन,
कर्ण बहुत था घबराया।।
बार–बार अर्जुन से कहता था,
मत बाण चला अर्जुन।
मानवता का पालन कर तू,
क्षत्रिय धर्म निभा अर्जुन।।

सज्जनो! कर्ण गिड़गड़ाते हुए अर्जुन को उपदेश सुनाते हुए ऐसे कहने लगा–

भजन

तर्ज : हरियाणा

दल–दल में रथ फँसा हुआ मैं आज बहुत लाचार।
निहत्थों पर जो हमला करता।
वह नर घोर नर्क में पड़ता।।
महानीच हत्यारा है, वह करले तनिक विचार।
बन्द लड़ाई कर दे अर्जुन, मत कर मुझ पर वार।।
अपना भाग्य जरा आजमा लूँ।
रथ का पहिया बाहर निकालूँ।।
दो–दो हाथ करुँगा फिर मैं, दिल में ली है धार।
बन्द लड़ाई कर दे अर्जुन, मत कर मुझ पर वार।।
मैं लड़ने से ना घबराता।
अर्जुन तुझको साफ बताता।।
ना मैं खौफ मौत का खाता, जान रहा संसार।
बन्द लड़ाई कर दे अर्जुन, मत कर मुझ पर वार।।
अर्जुन! धर्म की रक्षा कर लूँ।
अपने सिर पर पाप न धर तू।।
''नन्दलाल'' तू वेद धर्म का, कर जग में प्रचार।
बन्द लड़ाई कर दे अर्जुन, मत कर मुझ पर वार।।

पाठकगण! ध्यान देने का कष्ट करें। श्रीकृष्ण का तो जीवन लक्ष्य ही धर्म की रक्षा और पापियों का नाश करना था कर्ण जब बार–बार धर्मपालन की रट लगाए जा रहा था तो श्रीकृष्ण उसे धर्म–कर्म करने का दर्पण दिखाते हुए एवम् फटकारते हुए तथा अर्जुन को कर्ण के खोटे कर्मों की याद दिलाते हुए कुरुक्षेत्र के मैदान में कर्ण से कहने लगे।

(इसे समझने से सबका भला होगा) अतः सभी ध्यान दें।

भजन

तर्ज – हरियाणा।

आज कर्ण तू युद्ध क्षेत्र में, देता धर्म दुहाई।
बात धर्म की करता पापी, शर्म तुझे ना आई।।
उस दिन को कर याद, भीम को तुमने जहर खिलाया।
जहर खिलाकर, तुमने उसको गंगा बीच बहाया।
जुल्म किया था, महल लाख का, एक बड़ा बनवाया।
धोखा किया बड़ा भारी, ना ईश्वर का भय खाया।।
धीर वीर बलवानों की मर्यादा धूल मिलाई।
बात धर्म की करता पापी, शर्म तुझे ना आई।
तूने शकुनी, दुःशासन ने, दुर्योधन बहकाया।

जुआ खेलने इन पंडों को, हस्तिनापुर बुलाया।
जुआ जाल में इन भोलों को, तुमने कर्ण फँसाया।
राजपाट, धन माल खजाना, इनका सब कब्जाया।
भरी सभा में सती द्रोपदी, तुमने बहुत सताई।
बात धर्म की करता पापी, शर्म तुझे ना आई।।
मैं हस्तिनापुर गया कर्ण, दुर्योधन को समझाने।
मिल करके, तुम सभी लगे थे, मेरी हंसी उड़ाने।
गऊ चरानेवाला कह, मेरा अपमान किया था।
तुमने भले–बुरे का पापी, कुछ ना ध्यान किया था।
तूने अपनी मौत कर्ण सुन, अपने आप बुलाई।
बात धर्म की करता पापी, शर्म तुझे ना आई।
मेरी बात कर्ण सुन उस दिन, मान अगर तुम लेते।
इन पाण्डवों को पांच गांव तुम, उस दिन दिलवा देते।।
घोर युद्ध सुन कर्ण कुचाली, बोल दुष्ट क्यों होता।
अबला, बालक नहीं बिलखते, यह जग सुख से सोता।
काल न बनते एक–दूसरे के, आपस में सब भाई।
बात धर्म की करता पापी, शर्म तुझे न आई।।
अभिमन्यु कौरव सेना के, काबू में ना आया।
तुम सबका अभिमान धूल में उसने कर्ण मिलाया।
चक्रव्यूह को तोड़ दिया था, भारी युद्ध मचाया।।
सातों टूट पड़े बालक पर, धर्म–कर्म बिसराया।
युद्ध क्षेत्र में गिरे हुए पर, तुमने गदा चलाई।
बात धर्म की करता पापी, शर्म तुझ ना आई।।
जैसी करनी, वैसी भरनी, कहते ज्ञानी–ध्यानी।
कीकर बोकर, आम कभी ना खा सकता अज्ञानी।
दुर्योधन का साथ निभाया, की हरदम शैतानी,
भक्त विदुर से विद्वानों की, सीख कभी ना मानी।।
नन्दलाल कहता है तेरे मौत शीश पर छाई।
बात धर्म की करता पापी, शर्म तुझे ना आई।।6।।

सज्जनो! महाभारत में साफ लिखा है, श्री कृष्णचन्द्र की फटकार सुनकर कर्ण घबरा गया और अर्जुन से बार–बार युद्ध रोकने की प्रार्थना करके गिड़गिडाता रहा। उसकी गन्दी हरकतों की गाथा सुनकर अर्जुन ने भी उसे बुरी तरह छिटका और कहा– कर्ण! तेरे पापों की सूची बहुत बड़ी है। वास्तव में श्री कृष्णचन्द जी ठीक कह रहे हैं। मैं अब तुझे जीवित नहीं छोड़ूँगा। पापी तुझे अब कोई नहीं बचा सकता।

अर्जुन की जोश भरी बातें सुनकर कर्ण उसी रथ पर धनुष लेकर चढ़ गया तथा युद्ध करने को तैयार हो गया। यह देखकर योगीराज कृष्णचन्द्र ने अर्जुन को सावधान करते हुए कहा–

श्री कृष्ण बोले,

अर्जुन! मत कर तू किसी तरह का भय
धनुष उठाकर बाण चला, अब तेरी विजय हुई निश्चय।।
श्री कृष्ण के वचन सुने, अर्जुन ने धनुष उठाया था।
मारा तीक्षण बाण कर्ण का, धड़ से शीश उड़ाया था।।

कर्ण के मरते ही कौरव सेना में हा–हाकार मच गया और दुम–दुबाकर युद्ध क्षेत्र से सेना भाग गई। जो धूर्त व्यक्ति श्री कृष्ण को दोष देते हैं, वे मानवता के शत्रु हैं। हमें उन धूर्तों की कुचालों से सावधान रहना चाहिए। वास्तव में श्री कृष्णचन्द्र जो युग नायक थे, मेरी ईश्वर से प्रार्थना है–

दानवता से तृषित जग का, करो प्रभु! कल्याण यहाँ।
जिससे यह भारत दुनिया का, गुरु दयानिधि बन जाए।
क्रूरता–युद्ध–द्वेष भूमि में, कोई नजर नहीं आए।

कविरत्न पत्रकार, आर्य सदन बहीन,
जनपद–पलवल, हरियाणा

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़े

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत का 33वाँ वार्षिकोत्सव भव्यता के साथ सम्पन्न

– अशोक कुमार शर्मा

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबू पर्वत में दिनांक 27 से 29 मई 2023 तक त्रिदिवसीय भव्य वार्षिक समारोह प्रतिदिन तीन सत्रों में हुआ। प्रातः–सायं यज्ञ–हवन के साथ साधु संतों एवं विद्वानों के प्रवचन, भजन–उपदेश तथा विद्वत् सम्मान एवं व्यायाम प्रदर्शन के साथ तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव सफ़लतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल न्यास के अध्यक्ष आचार्य ओम्प्रकाश आर्य ने बताया कि गुरुकुल के 33वें वार्षिकोत्सव में सम्पूर्ण देश से आर्य जगत के संन्यासी, वैदिक विद्वान, लेखक, भजनोपदेशक सम्मिलित हुए। गुरुकुल न्यास के मंत्री एवं गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रोफेसर कमलेश कुमार शास्त्री के नेतृत्व में स्वर्गीय रामकिशन चुग्ध एवं चन्द्रकान्ता चुग्ध ऋषिकेश की पुण्य स्मृति में परिवारजनों के सहयोग से वैदिक विद्वान–लेखक, भजनोपदेशक सम्मान समारोह आयोजित हुआ। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व उपकुलपति, विशुद्ध मनुस्मृति के सम्पादक डॉ. सुरेन्द्र कुमार को सपत्नीक विद्वत् सम्मान के रुप में साफा पहनाकर, माल्यार्पण कर, शॉल ओढ़ाकर, प्रशस्ति पत्र व 51 हजार रुपए राशि भेंटकर अभिनंदन किया गया। प्रतिनिधि के रुप में ब्रह्मचारी ने चरण–स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त किया। शंखनाद तथा वैदिक मंगलाचरण से स्वागत हुआ।

आर्य परिवार शिवगंज द्वारा स्वर्गीय भीष्मदेव वानप्रस्थी एवं धर्मपत्नी ओटीबाई की पुण्य स्मृति में 95 वर्षीय आर्य भजनोपदेशक भूपेन्द्र सिंह तथा आर्य समाज इतिहास के जानकार, अनेक पुस्तकों के लेखक, सम्पादक, प्रकाशक प्रा. राजेंद्र जिज्ञासु–अबोहर का भी इसी तरह सम्मान किया गया। प्रशस्ति–पत्र वाचन में उनका जीवन परिचय तथा श्रेष्ठ कार्यों का उल्लेख है।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के कर्मठ प्रधान, गुरुकुल के न्यासी आर्य किशनलाल गहलोत, यशस्वी मंत्री आचार्य जीववर्धन शास्त्री, स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती ने आर्यजनों को सम्बोधित कर संगठन के कार्यविस्तार में सहयोगी बनने का आह्वान किया।

अरविन्द राणा के प्रशिक्षण द्वारा ब्रह्मचारियों ने आंखों पर काली पट्टी बांध कर रंग पहचान, अंक व शब्द पढ़कर, वस्तु पहचान कर सभी दर्शकों को आश्चर्यचकित कर दिया।

वार्षिकोत्सव के अवसर पर गुरुकुल परिसर में एडयूटेस्ट सोल्युशन प्रा.लि. अहमदाबाद के सहयोग से कम्प्यूटर लेब का उद्घाटन एवं प्रेमसिंह सांखला–जोधपुर निवासी के सुपुत्र लक्ष्मण सांखला (गुरुकुल के पूर्व छात्र) लंदन में इंजीनियर के आर्थिक सहयोग से पुनर्निमित महर्षि दयानन्द गुफा तथा डॉ. भारती बहन पटेल के सात्विक दान से स्वामी श्रद्धानंद गुफा का लोकार्पण हुआ।

सायं आर्यवीर दल के व्यायाम शिक्षक यतीन्द्र शास्त्री के नेतृत्व में ब्रह्मचारियों द्वारा मधुर संगीत पर सर्वांग सुन्दर व्यायाम, सूर्य नमस्कार, भूमि नमस्कार, दंड–बैठक, नियुद्धम्, काते, रस्से पर आसन, पोल मल्लखंभ, योगासन, पिरामिड, लाठी, भाला, तलवार संचालन किया गया। शक्ति प्रदर्शन के रुप में तेजस्वी सिंह ने सीने पर से मोटरसाइकिल

निकालकर दर्शकों को अचंभित कर दिया। इस अवसर पर आईजी–सीआरपीएफ संजय जून ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि योग–आयुर्वेद, खगोल विज्ञान, संस्कृत भाषा आदि भारत की विश्व को विशेष देन है।

गुरुकुल न्यास के अध्यक्ष आचार्य ओम्प्रकाश आर्य ने बताया कि वार्षिकोत्सव समारोह में हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षक कन्हैयालाल आर्य, प्रभुभाई वेलाणी, दुर्गा प्रसाद गोयल, हरिभाई आर्य, जयपाल बेन्दा, जयसिंह गहलोत, नरसाराम आर्य, ज्योत्स्ना धर्मवीर, मोतीलाल आर्य, बाबुलाल आर्य आदि महानुभावों का विशेष सहयोग रहा।

आर्यसमाज के नवें व दसवें नियमों पर मेरे व्यक्तिगत विचार इस प्रकार से हैं।

ओम्प्रकाश गुप्ता

नवा नियम – 'प्रत्येक को अपनी उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए'

अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति को अपनी उन्नति तो अवश्य करनी चाहिए, परंतु मात्र अपनी स्वयं की उन्नति करना ही पर्याप्त नहीं है। इसके साथ–साथ अन्यों की उन्नति करने में भी यथा योग्य सहयोग करना चाहिए। हमें स्वयं की उन्नति से अहंकारी नहीं हो जाना चाहिए। सहयोग करने में हमारा यश बढ़ता है और समाज भी उन्नत होता है।

'सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए'

समाज उन्नति करता रहे और हम स्वयं पिछड़ जाएं, ऐसा नहीं है। बल्कि स्वयं की उन्नति के साथ–साथ समाज के उन्नति करते रहने पर ही हमें वास्तविक सन्तुष्टि प्राप्त होती है। समाज के सभी व्यक्ति उन्नति करने पर ही समाज समृद्ध होता है।

यह नियम समाज को सुदृढ़ व प्रगतिशील होने की व्यवस्था को भी प्रदर्शित करता है।

दसवाँ नियम – यह नियम स्वतंत्रता व स्वच्छता को परिभाषित करता है।

'प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र हैं।'

अर्थात् व्यक्तिगत कार्य व हितों को साधने में मानव पूर्ण स्वतन्त्र है।

हमारे संविधान में भी हमें स्वतन्त्रता का मूल अधिकार प्राप्त है।

यह नियम भी हमारी स्वतन्त्रता को प्रदर्शित करता है।

हमें स्वतन्त्रता को स्वच्छन्दता नहीं समझना चाहिए। स्वतन्त्रता प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार है। अतः हमें दूसरों की स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

'सब मनुष्य को सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए।'

अर्थात् समाज में समरसता की व्यवस्था हेतु जो भी सामाजिक नियम है उनका हमें हर हाल में पालन करना ही चाहिए। हमें अपनी व दूसरों की स्वतन्त्रता को कायम रखने हेतु परस्पर ऐसा व्यवहार करना चाहिए जिसमें समाज का सर्वहित सिद्ध होता हो।

यहाँ परतन्त्रता से यही तात्पर्य है।

हमारे संविधान में भी यह प्रावधान किया हुआ है।

मैंने अपने विचार सभी विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है विद्वानों के द्वारा इसमें उचित संशोधन अपेक्षित है।

मंत्री आर्यसमाज जनता कॉलोनी, जयपुर।

समाचार – वीथिका

1. सभी आर्यसमाजों के सदस्यों और धर्म प्रेमी सज्जनों को सूचित करते हुवे अत्यन्त हर्ष हो रहा है की महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जोधपुर आगमन 31 मई 1883 की स्मृति में प्रतिवर्ष मनाये जाने वाले और ऋषि की 200वीं जन्म जयन्ती उत्सव की श्रृंखला में दिनांक 31 मई और 1 जून को आर्यसमाज जोधपुर रातानाडा के प्रांगण में मनाया जा रहा है ऋषि की स्मृति को याद करने और वैदिक धर्म की ज्ञान ज्योति पर्व को घर घर पहुँचाने का संकल्प लेने इस कार्यक्रम में परिवार सहित पधार कर विद्वानों के मुख़ारविन्द से मधुर भजन, प्रवचन सुन कर अपनी आत्मा को शुद्ध करें और आनन्द को प्राप्त करें। धन्यवाद।

निवेदक विजय सिंह भाटी
प्रधान आर्यसमाज जोधपुर, रातानाडा

2. आर्य कन्या विद्यालय अलवर की 12वीं के परिणामों में विद्यालय, माता–पिता एवं टीचर्स का नाम छात्राओं ने रोशन किया। 12वीं में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने पर आर्य कन्या विद्यालय समिति द्वारा ओम् का पीत वस्त्र पहनाकर सर्वश्री दुलाक्षी डीडवाल, मुस्कान मीणा, सानिया महर, श्रेया अग्रवाल, कुमकुम यादव, सिमरनजीत कौर, विदिशा वर्मा, तनु राठौड़, भूमिका बुद्ध राजा, प्रिया वर्मा, कुमारी चेष्टा, रेशमा बाई, कोमल, तानिया जैन, डिम्पल, अंशु सैनी, निशा, शगुन विजय आदि को सम्मानित किया गया।

3. बड़े ही दुख के साथ सूचित करते है कि भरतपुर सम्भाग की छोकरवाड़ा आर्यसमाज के प्रधान श्री विधु जी आर्य का आकस्मिक देहावसान हो गया। आर्यजगत् के कर्मठ सक्रिय वैदिक धर्म प्रचारक सत्यनिष्ठ व्यक्तित्व के धनी थे। मैंने उनके दर्शन किए और उनके सरल सौम्य जीवन को देखा है इनमें कोई एषणा नहीं थी, कोई पद का लालच नहीं था, आर्यजगत् में श्री विधु जी की जो कमी हुई है उसको पूरा नहीं किया जा सकता राजस्थान के सभी आर्यजनों की और से अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ और दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करता हूँ।

ओम् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

आर्य किशनलाल गहलोत प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क, जयपुर

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन होगा सितम्बर माह में

महर्षि दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती वर्ष के उपलक्ष में आगामी सितंबर माह के अंतिम सप्ताह में जयपुर नगर में प्रांतीय आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया जाएगा। दिनांक 28 मई 2023 को आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबू पर्वत में आहूत आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के साधारण सभा के अधिवेशन में गत साधारण सभा दिनांक 27–3–2022 एवं अंतरंग सभाओं द्वारा लिए गये निर्णयों की संपुष्टि, अन्य महत्वपूर्ण निर्णयों को सर्वसम्मति से पारित करने के साथ साथ प्रांतीय आर्य महा सम्मेलन के आयोजन का निर्णय लिया गया। उक्त सम्मेलन में संपूर्ण राजस्थान प्रांत से एवं अन्य प्रांतों से गुरुकुल, डीएवी शिक्षण संस्थाओं एवं स्थानीय आर्य समाजों द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थी के साथ 25,000 से अधिक आर्यजनों की उपस्थिति संभावित है। द्विदिवसीय इस सम्मेलन में विभिन्न सत्रों में महर्षि दयानंद सरस्वती के दर्शन, स्वातंत्र्यसमर एवं दयानंद सरस्वती, आर्य समाज का राष्ट्र निर्माण में योगदान महिला सम्मेलन, दयानंद सरस्वती की राजनीतिक अवधारणा, दलितोद्धार, नवजागरण एवं आर्य समाज आदि आदि अनेक विषयों पर सम्मेलन, कार्यक्रम एवं संगोष्ठियों का आयोजन किया जाएगा। आर्य समाज के युवा संगठन आर्यवीर दल द्वारा शक्ति प्रदर्शन, व्यायाम प्रदर्शन, विभिन्न योगमुद्राओं का प्रदर्शन, नाट्य प्रस्तुतियाँ एवं राष्ट्र भक्ति से ओत–प्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रमों के भव्य आयोजन भी किये जायेंगे। इस अवसर पर भारतवर्ष से सुप्रसिद्ध संन्यासी, विद्वान्–विदुषी, भजनोपदेशक, सामाजिक कार्यकर्ता एवं राजनेता सम्बोधित करेंगे।

अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा आयोजित 40 वें वैचारिक क्रांति शिविर के समापन के अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान सुरेश चन्द्र आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के महामंत्री विनय आर्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के पदाधिकारीगण।

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के कोषाध्यक्ष श्री जयसिंह गहलोत का अभिनन्दन करते हुए अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामंत्री जोगिंदर खट्टर।

डाक पंजीयन सं. जयपुर सिटी/214/2023-25 आर. एन. आई नं.10471/60

वैदिक मिशन ट्रस्ट के प्रमुख, देश के युवाओं में देशभक्ति का जज्बा एवं समृद्ध भारतीय संस्कृति के संवाहक, आर्ष गुरुकुल टंकारा के सुयोग्य विद्वान् स्नातक स्वामी धर्मबंधु जी के साथ आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के पदाधिकारीगण।

दिनांक 28 मई 2023 को आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय, आबू पर्वत में आहूत आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के साधारण सभा के अधिवेशन को संबोधित करते हुए सभा मंत्री जीव वर्धन शास्त्री।

प्रेषक:-
सम्पादक
आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर-302004

प्रेषित